REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

वर्तमान हिंदी रंगमंच में विभिन्न पक्षों की प्रयोगवादिता एवं रंगमंच पर उसका प्रभाव

योगेन्द्र अग्रवाल
शोध छात्र, नाटय विभाग , राजस्थान विश्वविद्यालय , जयपुर .

प्रास्ताविक :–

जिस तेज गति के साथ विज्ञान और तकनीक दुनिया को बदल रहे है उससे आज का मनुष्य धीरे धीरे मशीनों एवं तकनीक पर आश्रित होता जा रहा है । " नया पूरी तौर से नया हो भी नहीं पता की पुराना पड़ जाता है । इतिहास बड़ी तेजी से करवटें बदल रहा है ।"1 रंगमंच का मुख्य सार नाटक की प्रस्तुति में होता है तथा नाटक का मुख्य सार उसके आलेख में लिखे हुए शब्दों में नहीं अपितु मंच पर घटित कार्य कलाप या कार्य व्यापार में होता है अर्थात नाटक के मंचन में होता है । विज्ञान और तकनीक के इस दौर में रंगमंच पर केवल तकनीक ने ही अपना असर नहीं डाला बल्कि विभिन्न तरह के प्रयोगों ने भी रंगमंच को प्रभावित किया है ।

जो समाज जितना अधिक प्रयोग शील होगा वो वो समाज उतना जल्दी ही विकसित होगा । प्रयोग एक क्रिया है तथा विकास का आधार है । " परम्परा और प्रयोग के द्वंद से विकास के नए द्वार खुलते है साहित्य के क्षेत्र में भी हर युग में प्रयोग हुए है । समर्थ रचनाकार कुछ नया देने के लिए प्रयोग करता है।"2 ऐसा केवल साहित्य या किसी एक कला विशेष के साथ नहीं हो रहा है , अब हर क्षेत्र में कुछ नया करने की लालसा कई प्रकार के प्रयोग करने के लिए हमारे मन मस्तिष्क को उद्वेलित करती है और ऐसा ही रंगमंच के साथ रंगमंच में हो रहा है । " आज हम नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में प्रयोग शब्द को एक दूसरे अर्थ में लेते हैं और वह यह कि जब भी रंगमंच में कोई नया तत्व, युक्ति या शैली दिखाई पड़ती है, हम उसे प्रयोग की संज्ञा दे देते हैं। लेकिन भरत ने जिन अर्थों में प्रयोग शब्द का उल्लेख किया है, वह आज से कहीं ज़्यादा व्यापक और गहराई लिए हुए हैं। उनके अनुसार हर प्रदर्शन इसलिए प्रयोग है क्योंकि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि हम जो नाट्य प्रस्तुति करने जा रहे हैं उसका मंचन उस दिनविशेष में सफल ही होगा अर्थात् वह मंचन सही मायनों में अधिक से अधिक एक प्रयोग ही कहा जा सकता है जिसकी सफलता असफलता एक साथ कई चीज़ों पर निर्भर करती है जिनमें आलेख का चयन, अभिनेताओं की तैयारी, मंचसज्जा, रंगदीपन, वेशभूषा, रूपसज्जा, मंच उपकरण और अभिनेता के साथ इन सब चीज़ों का ठीक–ठीक संयोजन और अन्ततः दर्शक की प्रतिक्रिया ।" 3

आज आम और साधारण व्यक्ति थका हारा सा महसूस होता है ।ऐसा लगता है उसकी सारी क्षमता खत्म हो गई है । सत्ता और पूंजीवादी व्यवस्था के आगे मनुष्य का व्यक्तिव छोटा हो गया है । आज जीवन की परिभाषाएँ बदल रही है ।मनुष्य के मस्तिष्क में बसी हुई पुरानी मान्यताएं , धर्म एवं भगवान् के प्रति नैतिक धारणाओं के पैमानों में बहुत गहरा और आमूल चुल परिवर्तन आया है । तीव्र गति से करवट ले रही राष्ट्रीय , अन्तर्राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के कारण अब साहित्य , सिनेमा तथा रंगमंच में नए भाव बोध का अनुकरण हो रहा है , तथा नए दृष्टिकोण एवं नए आयाम स्थापित करने की कोशिश हो रही है । हिंदी रंगमंच केवल हिंदी भाषा में लिखे नाटकों का मंच नहीं वरन किसी भी अन्य भाषा से अनुदित या रूपांतरित होकर हिंदी में मंचित वाले नाटक भी हिंदी रंगमंच का ही हिस्सा है अर्थात हिंदी नाटक का तात्पर्य हिंदी भाषा में लिखे हुए नाटक से है तो हिंदी रंगमंच का आशय हिंदी में प्रदर्शित होने वाले नाटको से है ।अब नए निर्देशक नाटक को प्रेक्षकों की सहहगिता , तथा उनकी पसंद के आधार पर रखकर मंचित कर रहे है ।

वर्तमान हिंदी रंगमंच में आज विसंगतियों, तनाव , उलझन , शोषण , मानवीय विडम्बनाएं एवं विकृतियाँ सब नए रंगमंच का आधार तैयार करते है । " आज का नाटककार मंच की अधिक से अधिक क्रियाशीलता , सजीवता , स्वभाविकता , और दर्शक से अपनी निकटता में विश्वास करता है । इतनी निकटता में की नाटक उसे अपने बीच में से उत्पन्न होती परिस्थिति जान पड़े।"4 आज का समय अर्थ प्रधान समय है , आज अर्थ अर्थात धन को इस काल का सबसे बड़ा हथियार माने जाना लगा है । जो व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्षम होता है वो ही शक्तिशाली माना जाता है। बदलते मानवीय एवं जीवन मूल्य को लेकर गोविन्द चातक लिखते है " स्वतंत्रता से पूर्व जीवन की एक दिशा थी , एक सुनियोजित लक्ष्य था और उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए सेवा , संकल्प, त्याग और बलिदान के वांछित आदर्श थे । स्वतंत्रता आई तो लक्ष्य प्राप्ति के साथ ही उससे सम्बन्धित आदर्श भी आँखों के सांसे तिरोहित हो गए । उनके तिरोहित होते ही सबकी त्यागी , तपस्वियों , सत्ताधारियों , अवसरवादियों की नज़रे अपने स्वार्थ पर केन्द्रित हो गई । इस से कई विसंगतियाँ पैदा हुई , बेकारी , भुखमरी, सामाजिक अन्याय , असमानता , काला बाजारी , तस्करी और शोषण ... कुल मिलाकर भौतिकवादी दृष्टि से सामाजिक विसंगतियों के बीच इतनी प्रभाव शाली भूमिका निभाये है की सारे परिवेश और जीवन मूल्य टूटते दिखाई देने लगे है ।"5 बदलते जीवन मूल्य हमारी संस्कृति और सभ्यता दोनों को प्रभावित कर रहे है । अनुभूति तथा अभिव्यक्ति के स्तर पर किये जाने वाले नए प्रयोगों की प्रक्रिया ही प्रयोगवादिता कहलाती है । नवसृजन का मुख्य आधार प्रयोगवादिता ही होती है । प्रयोगवादिता में नए प्रयोगों के नाम से प्रयोगों का सदुपयोग एवं दुरुपयोग दोनों हो सकते है । प्रयोग कभी कभी दर्शको को चौकाने के लिए किये जाते है तो कभी कभी नई प्रस्तुति को पुरानी प्रस्तुती से अलग दिखाने के लिए , अधिकतर यह नाटक के निर्देशक के ऊपर ही निर्भर करता है की वो नाट्य प्रस्तुति में किस प्रकार के प्रयोग करेगा ।

हिंदी रंगमंच ने परम्परा के उन तत्वों को ग्रहण किया हुआ है जो जीवंत है तथा जो प्रयोगशील प्रवृति के साथ प्रतिमान स्थापित कर सकते है । रंगमंच वैसे भी एक सामूहिक कला है जो समाज की रीतियों पर आधारित होती है और यह रीतियाँ समयनुसार बदलती रहती है । प्रयोग की परम्परा में इक्कीसवीं सदी का हिंदी रंगमंच बहुतायात प्रयोगवादिता का साक्षी है , रंगमंच के हर क्षेत्र और पक्ष में लगातार प्रयोग किये जा रहे है । वैसे तो प्रयोग की यह परम्परा केवल हिंदी रंगमंच ही बल्कि विश्व के प्रत्येक देश के प्रत्येक रंगमंच में निश्चित गति से आगे बढ़ रही है । " प्रयोग के अनेक स्तरों से गुजरकर हिंदी नाटक के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है । कथ्य व् शिल्प दोनों में बदलाव आया है और मंचन ही अब नाटक का लक्ष्य बन गया है । अब नाटक के लिए न स्थूल कथ्य चाहिए न काव्यात्मक भावुकता । अब तो नाटक यथार्थ की भूमि पर विचरने वाला आम आदमी है जिसे अपनी भाषा में अपनी बात पूरी इमानदारी

से कहनी है ।"6 आधुनिक हिंदी रंगमंच में मंचित होने वाले नाटक स्पेस, कथ्य , भाषा सम्वाद , दृश्य विन्यास , प्रकाश संयोजन के साथ नाटक से दर्शको को जोड़ने की प्रक्रिया में भी प्रयोगों का प्रयोग किया जा रहा है तथा आज रंगमंच में नाटक के प्रत्येक स्तर से रंग संस्कारों के प्रयोग का रंगकर्मियों का स्वाभाव बन गया है । वर्तमान हिंदी रंगमंच में नाट्य आलेख अथवा कथ्य , पात्र योजना अर्थात एकल एवं द्विपात्रीय नाट्य प्रदर्शन एवं भाषा के स्तर तथा थिएटर स्पेस को लेकर कई तरह के प्रयोग देखने को मिल रहे है । अगर हम हिंदी रंगमंच की बात उत्तर भारत के सबसे हिंदी भाषी राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार के रंगमंच के आधार पर करे तो हिंदी रंगमंच की स्थिति बहुत ही अफसोसजनक जनक है । इतने बड़े राज्यों में रंगमंच के नाम पर तो रंगमंच करने के लिय मंच नहीं है , रिहर्सल करने के लिए स्थान नहीं मिल पाता । दिल्ली का हिंदी रंगमंच हो या बंगाल का हिंदी रंगमंच या किसी अन्य रंगमंच का रंगकर्मी हो अगर वो प्रस्तुति करने की ठान ले तो नए स्पेस बना लेगा । " छोटे छोटे स्टूडियो थिएटर , इंटिमेट स्पेस , कोई छत , कोई गैराज , कोई पंचायत का हाल मिल जाये जन्हा वो नियमित हिंदी थिएटर कर सके , टिकट काट दर्शक उस तक पहुँच जाए , कुछ तकनीकी सुविधाएं साधारण सी उपलब्ध हो सके– तो वो क्या न कर डाले ।"7 हिंदी प्रदेशो में रंगमंच अपने लिए एक नई जमीन, नए दर्शक तलाशने की जद्दोजहद में है । इसके लिए तरह–तरह के उपाय और युक्तियां सोची जा रही है । दिल्ली के मंडी हाउस इलाके में नाटकों के लिए उपयुक्त सभागारों का एक दिन का किराया ही 20,000–50,000 रु. के बीच पड़ता है । टिकटों ऊंची कीमत रखने और सारे टिकट बिकने पर भी वह वसूल कर पाना यहां के रंगकर्मियों के लिए टेढ़ी खीर होता है । इसके अलावा रिहर्सल की जगहों का संकट , हिंदी प्रदेशों के बाकी शहरों में भी स्थितियां बहुत अलग नहीं रही हैं । इसलिए आवश्यक हो जाता है की प्रस्तुतियों के लिए नए नए मंच तैयार किये जाए , अतः नाट्य निर्देशक ऐसे नाटको का चयन करने लगे जिनके लिए किसी खास तरह की रंगशाला की आवश्यकता ना हो बल्कि किसी भी स्थान पर प्रस्तुति की जा सके । पिछले कुछ सालों में नाटक घरो में ड्राइंग रूम , सोसाइटी के हॉल में , अपार्टमेंटस के तलघर में, रेस्टोरेंट में तथा घरो की छतो पर भी प्रस्तुतियां की गयी ।

सारी दुनिया विलियम शेक्सपियर के लिए एक मंच थी। और ऑस्कर वाइल्ड के लिए रंगमंच सभी कला रूपों में सबसे महान कला । रंगमंच सबसे तात्कालिक तरीका जिसमें एक इंसान दूसरे के साथ एक इंसान होने का भाव साझा कर सकता था। लेकिन यह सब तभी संभव है जब कोई दर्शक हो। और बहुत से उत्साही रंगकर्मी है , जो नए दर्शकों को लाने के लिए विभिन्न प्रयासों को आजमाते रहते हैं। रंगमंच एक बड़े दबाव में है मोबाईल फ़ोन , सुचना प्रोधोगिकी और टीवी वगैरह लगातार उसके लिए चुनौती पेश कर रहे हैं। उसे बड़ी प्रेरणा, बड़े इंस्पिरेशन की जरूरत है।

आज आवशयकता दर्शकों को रंगमंच तक लाने और उन लोगों को रंगमंच में सहभागी बनाने लिए प्रयत्न किये जा रहे , जिन्होंने अपने जीवन में कभी नाटक नहीं देखा है। आपको पूर्व–निर्धारित धारणाओं को तोड़ना होगा कि यह केवल बुद्धिजीवियों के लिए है। और एक बार जब आप किसी नए व्यक्ति को लाते हैं, तो वो रंगमंच से जीवन के लिए प्रेरित होते हैं।

इनदिनों कई रंगकर्मियों के समुदाय ने लोगों तक पहुंचने के लिए कुछ सोशल मीडिया तथा सुचना तकनीक की मदद लेने लगे है इस से कम समय ज्यादा लोगो तक अपने प्रस्तुति के बारे में सुचना भेजी जाने लगी है जिस कारन दर्शक अपनापन महसूस करता है और कोशिश करता है की प्रस्तुति देखने पंहुचे । जबलपुर (मध्य प्रदेश) में 2008 से नियमित काम कर रहे युवा रंगकर्मी 36 वर्षीय आशीष पाठक ने तो कुछ और भी तरकीबें निकाली हैं दिलचस्प कथानक वाले नाटक चुनने के अलावा उन्होंने दर्शकों का एक डाटा बैंक तैयार किया है। वे बताते हैं, ''इस वक्त मेरे पास 3,200 दर्शकों के मोबाइल नंबर हैं । इनमें जबलपुर और आसपास के गांवों के अलावा नरसिंहपुर, सतना और कटनी तक के लोग जुड़े हैं, तथा जुड़ रहे हैं. एक एसएमएस से

सभी को संदेश चला जाता है.'' दर्शकों की रुचियों का ध्यान रखते हुए वे नाटक के बारे में खुद उन्हीं से सुझाव लेते रहते ह।"8 पिछले कुछ वर्षो में रंगमंच में दर्शको की संख्या बढने के पीछे यह एक महत्वपूर्ण कारण रहा है की अब दर्शको को प्रस्तुतियों की सुचना एक क्लिक से मिल जाती है दूसरा रंगकर्मियों के लिए यह आर्थिक रूप से बहुत ही किफायती है । रंगमंच में यह प्रयोग सीधे मंचन को तो प्रभावित नहीं करता लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से रंगमंच को प्रभावित करता है क्योंकि बिना दर्शक के प्रस्तुति का कोई महत्व ही नहीं । हिंदी वो भाषा है जिस पर आप चाहे कोई भी प्रयोग कर सकते है , ऐसा कहना की रंगमंच की कोई भाषा नहीं होती एवं कोई अहिन्दी भाषी अभिनेता अगर हिंदी बोलता है तो यह रंगमंच की समृधी में सहायक होगा ।ऐसा सोचना शायद सही भी है क्योंकि केवल हिंदी रंगमंच का दर्शक ही वो दर्शक है जिसके सामने मुम्बइया , पंजाबी , बिहारी,गुजराती या असम और बंगाल किसी भी लहजे और उच्चारण में बोली जाने वाली हिंदी भी चलेगी । वर्तमान में हिंदी रंगमंच में भाषा को लेकर ऐसे ही कई प्रयोग हो रहे है । बीसवीं सदी के अन्त तक लिखे गए नाटको में हिंदी एवं दूसरी भाषाओँ से अनुदित नाटको में प्रयुक्त हिंदी साहित्यिक हिंदी की समकक्ष थी वो हिंदी अब अब बदल गई है । वर्तमान में ऐसे कई नाटक है जो हिंदी रंगमंच की शान है उनकी भाषा ऐसी है की दर्शक उस से जुड़ जाते है । हिंदी के साथ साथ उसमे उर्दू, अंग्रेजी और जिस शहर या प्रान्त का नाटक है वंही की स्थानीय भाषा एवं बोली तथा जन्हा प्रस्तुति हो रही वंहा बोले जाने वाली भाषा या बोली को निर्देशक नाटक में समाहित करने लगे है जिस कारन दर्शक उस से जल्दी कनेक्ट कर पाते है । भाषा के इस तरह के प्रयोग के पीछे एक बड़ा कारण यह भी है की अब हिंदी में साहित्यकार नाटक लिखना लगभग बंद कर चुके है । अब मुख्य रूप से रंग मण्डली अपनी प्रस्तुति के लिए स्वंय अपने लिए नाटक लिखवाती है या कई बार किसी खास विषय पर इम्प्रोवाइज्ड नाटक भी तैयार किया जाता है । यह लोग जो नाटक लिखते है उनमे भाषा पर उस गहराई से काम नहीं करते जिस गहराई से कोई साहित्यकार लिखता लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है की दर्शक इस प्रयोग से हिंदी रंगमंच से जुदा ना होकर जुड़ रहा है इस अहिन्दी भाषी अभिनेता एवं दर्शक हिंदी से भी सहज होने लगा है जो भविष्य में रंगमंच के लिए अच्छा है ।

यूँ तो वर्तमान हिंदी रंगमंच में अलग अलग स्तर एवं पक्षों में प्रयोगों की बहुलता है और यह एक पुरे शोध का विषय हो सकता है ।समयनुसार प्रत्येक स्थिति में परिवर्तन आता है । हर सदी एवं पीढ़ी अपनी पिछली सदी एवं पीढ़ी से अधिक विकसित और शिक्षित होती है। वो अपनी शिक्षा एवं समझ को किस प्रकार चीजो को बेहतर करने में उपयोग कर सकती है इसके लिए निरंतर प्रयोग किये जाते रहे है , कई बार प्रयोग सफल रहते है , कई बार यह असफल हो जाते है लेकिन रंगमंच केवल कला नहीं इसमें विज्ञान भी है और जीवन का दृष्टिकोण । विज्ञान की बुनियाद ही प्रयोग होते है , आज जो विज्ञान सक्षम है वो प्रयोगों आधार पर ही सक्षम हुआ है , इसलिए प्रयोग आवश्यक है । फ़िलहाल तो हिंदी रंगमंच में हो रहे प्रयोगों से रंगमंच को लाभ ही मिला है । हिंदी रंगमंच में प्रस्तुतियों की संख्या बढ़ी है । रंगमंच से करने वाले लोगो की संख्या बढ़ी है और रंगमंच देखने वाले लोगो की संख्या भी बढ़ी है और उनका नजरिया भी बदला है हालांकि व्यवसायिक हिंदी रंगमंच दूर की कौड़ी है लेकिन असंभव नहीं है क्योंकि प्रयोग जारी है ।

संदर्भ

1. स्वातंत्र्योतर हिंदी नाटक : समस्या और समाधान डॉ. दिनेश चन्द्र वर्मा –प–25
2. सर्जना के तेवर , डॉ चन्द्र प 29
3. दूसरे नाट्यशास्त्र की खोज, देवेन्द्र राज अंकुर, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2010 प 49
4. गिरीश रस्तोगी , नटरंग, नाटक में नवीनता की मांग प–10 –11
5. हिंदी नाटक और रंगमंच पर ब्रेख्त का प्रभाव डॉ, सुरेश वशिष्ठ प 37–38

6. सर्जना के तेवर डॉ चन्द्र प 29
7. रंग प्रसंग 2010 , उषा गांगुली प 80
8. www.timsofindia.com

LBP PUBLICATION